सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)

लीना गोयल[1], नीलम देवी[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर सनातन धर्म कॉलेज अंबाला छावनी

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर सनातन धर्म कॉलेज अंबाला छावनी

सारांश

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निरंतर एवं नियमित रूप से चलने वाली एक प्रक्रिया है जो छात्र छात्राओं के सीखने सिखाने एवं आंकलन या मूल्यांकन दोनों के साथ संबंधित है। शिक्षण कार्य करते समय एक सार्वभौमिक लक्ष्य शिक्षक के सम्मुख विद्यमान रहता है, वह है विद्यार्थी का संपूर्ण विकास। परंतु विडंबना यह है कि विकास पूर्ण रूप से विद्यार्थी के द्वारा परीक्षा में प्राप्त किए अंको से जुड़ा हुआ है। कम अंक लेने वाला विद्यार्थी कमजोर माना जाता है। फिर वह व्यवहारिक जीवन में कितना ही कार्य कुशल क्यों ना हों। समय-समय पर इस विषय को लेकर अनेक विद्वानों एवं आयोगों, समितियों ने अपनी चिंताएं व्यक्त की। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन इस विचारधारा पर आधारित था कि सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते। उनके सोचने समझने की क्षमता अलग-अलग होती है जिस पर उनका विकास निर्भर करता है। यह विचारधारा भी महत्वपूर्ण मानी गई है कि कभी भी विकास टुकड़ों में नहीं होता। वह सतत एवं समग्र रूप से होता है। जिस प्रकार एक पौधे का विकास होता है तथा जैसे गर्भ में पल रहे एक बच्चे का विकास होता है। वैसे ही विकास भी निरंतर एवं समग्र रूप से ही होता है। महाविद्यालयों में वार्षिक परीक्षा की अपेक्षा सेमेस्टर प्रक्रिया के आधार पर मूल्यांकन की प्रक्रिया आरंभ की गई जिसके द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को प्रभावशाली बनाने का प्रयास भी किया गया।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन(CCE) छात्रों के विकास के समस्त क्षेत्रों का सतत एवं नियमित आंकलन है। यह बच्चे के प्रति धैर्य, संवेदनशील एवं स्नेह पूर्ण व्यवहार पर बल देता है। फिर चाहे उसके सीखने की प्रवृत्ति कैसी भी हो। इसके लिए वह विभिन्न विधियों एवं उपकरणों से बच्चे का आकलन करता है। इस प्रक्रिया में 3 शब्दों का प्रयोग किया जाता है- सतत, व्यापक एवं मूल्यांकन। सतत का अर्थ है- लगातार। एक शिक्षक विद्यार्थी का सतत आंकलन करता है जिसका प्रयोग वह अपने अध्यापन कार्य के साथ-साथ छात्र के क्रियाकलापों को देखकर हर समय करता है। यदि उसे परिणाम अपने अनुरूप नहीं मिलते तो वह

ISBN: 978-81-955611-4-8

अध्यापन की अथवा शिक्षण की प्रक्रिया को बदलने का प्रयत्न करता है। सतत के बाद नियमित आंकलन होता है।

व्यापक का अर्थ है- बच्चे का संपूर्ण विकास। जिसमें छात्र का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक ,नैतिक विकास शामिल होता है। एक सभ्य एवं आदर्श नागरिक बनाने के लिए इसकी सर्वाधिक आवश्यकता होती है। एक बच्चे का संपूर्ण विकास धीमी गति से होता है जिसके व्यापक आंकलन की आवश्यकता होती है।

मूल्यांकन से अभिप्राय छात्रों की सीखने की गति, कार्यकुशलता व्यवहार, अनुभव इत्यादि को जानने के लिए एक योजनाबद्ध प्रक्रिया से है जिसे प्रधानों द्वारा उपयोग में लाए गए उपकरणों से मापा जाता है माना जाता है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया जितनी अधिक प्रभावशाली एवं रुचि पूर्ण होगी उतना ही छात्रों का विकास तीव्र गति से होगा।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन तथा अधिगम एक दूसरे के समान अंतर चलने वाली प्रक्रियाएं हैं। जिसमें एक विद्यार्थी को सीखने के उचित अवसर देने के बाद ही मूल्यांकन किया जाता है। इसमें उसके विकास का निरीक्षण उसी विद्यार्थी की पूर्व स्थिति से किया जाता है जिसके आधार पर उसके विकास की गति निर्धारित कर के विकास के लिए अलग-अलग उपकरणों का उपयोग किया जाता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न उपकरण है जैसे

मौखिक उपकरण – अभिव्यक्ति-क्षमता, भाषायी-कौशल, उच्चारण, विचार, आत्मविश्वास इत्यादि।

अवलोकन उपकरण –कक्षा कार्य, प्रदत कार्य, सृजनात्मक कृतियां, कलाकृतियां, प्रोजेक्ट कार्य, पोर्टफोलियो, व्यवहार, कविता, कहानी, लेख, निबंध, लेखन और सर्वे द्वारा।

लिखित उपकरण – भाषायी कौशल, विचारों की क्रमबद्धता, श्रुतलेखन ,प्रश्न उत्तर, लेख संबंधी कार्य, लिखावट की स्वच्छता, व्याकरण, विषय की प्रस्तुति इत्यादि।

स्वमूल्यांकन उपकरण – परियोजना संचिका, प्रोजेक्ट द्वारा।

समेटिव आकलन उपकरण – एक निश्चित समय में छात्र-छात्राओं ने कितना सीखा यह जानने के लिए इसका प्रयोग किया गया। विद्यालय महाविद्यालयो में विभिन्न प्रकार की कार्यकुशलता को जानने के लिए वस्तुनिष्ठ ,अति लघु, लघु, दीर्घ, प्रश्न पूछे जाते हैं।

प्रारंभिक स्तर पर सीसीई प्रणाली के इस संकलन के आधार पर भिन्न प्रकार के परिणाम निकले। अधिकांश शिक्षण- संस्थाओं ने इसे बहुत जल्दी ही विद्यार्थियों पर लागू कर दिया। शिक्षकों और छात्रों को जो मूल्यांकन व परीक्षा की पुरानी प्रणाली के आदि थे, उन्हें इसमें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सीसीई का मुख्य उद्देश्य उन छात्रों पर दबाव कम करना था जो शैक्षिक प्रणाली में प्रभावी रूप से भाग लेने में असमर्थ होते हैं और इसे निराशा व कम आत्मविश्वास के साथ छोड़ देते हैं। हालांकि

ISBN: 978-81-955611-4-8

वास्तविक सीखने की तुलना में परियोजनाओं और गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रणाली की भी आलोचना की गई क्योंकि इसमें भी छात्रों का बोझ कम नहीं हुआ। इस प्रणाली को रटकर सीखने वाली प्रक्रिया से बेहतर तो कहा गया परंतु फिर भी इस मे भी सीखने की प्रकिया को समझने की अपेक्षा याद करने व तथ्यों को इकट्ठा करने पर अधिक जोर दे दिया।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उपकरणों में 1956 के बाद एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इन उपकरणों में एक ब्लूम इन टैक्सनॉमी उपकरण आया। जिसका प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर देखा जा सकता है। बेंजामिन ब्लूम एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने 1956 में टैक्सनॉमी ऑफ एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव नामक अपनी पुस्तक में ब्लूम का वर्गीकरण किया जो ब्लूमिंग टैक्सनॉमी के नाम से प्रसिद्ध हुई। वर्तमान शिक्षा इसी उपकरण पर आधारित है। ब्लूम के वर्गीकरण को शिक्षा के उद्देश्यों के नाम से भी जाना जाता है जिसके मुख्य रूप से छह उद्देश्य माने गए। वर्तमान मूल्यांकन में ब्लूम का सबसे अधिक योगदान है। इसके वर्गीकरण को मानसिक जीवन के 3 पक्षों ज्ञान ,भावना और कर्म के आधार पर विकसित किया गया, जिन्हें ज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक क्षेत्र कहते हैं। इस वर्गीकरण को शैक्षिक, तार्किक, मनोवैज्ञानिक आधार पर भी न्यायोचित एवं संतुलित माना गया।

इन क्षेत्रों को आगे 6 उपवर्गों में विभाजित किया गया

ज्ञानात्मक पक्ष	भावनात्मक पक्ष	क्रियात्मक पक्ष
ज्ञान	ग्रहण करना	उद्दीपन
बोध	अनुक्रिया	गामक क्रियाएं
प्रयोग	अनुमूल्यन	नियंत्रण
विश्लेषण	विचारना	समायोजन
संश्लेषण	व्यवस्था	स्वभावीकरण
मूल्यांकन	मूल्य समूह का विशेषीकरण	आदत पड़ना

ब्लूम में पहला स्थान ज्ञान का है जिसका संबंध ज्ञानात्मक पक्ष से है क्योंकि ज्ञान के बिना मूल्यांकन संभव नहीं हो सकता। इसलिए ब्लूम के वर्गीकरण में इसका महत्व सबसे प्रथम स्थान पर स्वीकार किया गया। दूसरा उप वर्ग बोध जिसका अर्थ है जिस विषय का हमें ज्ञान है उसके सभी पहलुओं से परिचित होकर गुण दोषों का बोध होना, तीसरा वर्ग अनुप्रयोग- ज्ञान को क्रियात्मक रूप ज्ञान का अनुप्रयोग उस ज्ञान को कुशलता में बदल देता है जिससे एक छात्र या छात्रा अनुभवी बनते हैं। चौथा उपवर्ग विश्लेषण- ज्ञान को प्रदान करता है। उसे कई भागों में विभाजित करके एक नई विचारधारा की खोज करता है। इसके उपरांत पांचवा संश्लेषण- उस विचारधारा के टुकड़ों को जोड़कर एक नवीन ज्ञान का निर्माण कर देता है। इन सभी पहलुओं के उपरांत अंत में छठा उपवर्ग मूल्यांकन कहलाता है। जिसमें यह नई विचारधारा कितनी विश्वसनीय एवं लाभदायक है इस पर विचार किया जाता है कि जिस उद्देश्य को ध्यान में रखकर छात्र

ISBN: 978-81-955611-4-8

छात्राओं को ज्ञान दिया जाता है उसे प्राप्त करने में कहां तक सफलता मिली और इसका मूल्यांकन किया जाता है ज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष भी कार्य करते हैं लेकिन मूल्यांकन में सबसे अधिक महत्व ज्ञानात्मक पक्ष का ही स्वीकार किया गया है I

इसी कड़ी में 2001 में ब्लूमिंग टैक्सनॉमी के महत्व को देखते हुए एडरसन ट्रैकहोल ने इस पर एक समायोजित मॉडल प्रस्तुत किया। उनके द्वारा यह कहा गया कि यह मॉडल तार्किक एवं उपयुक्त तभी सिद्ध होगा यदि इसमें वह क्रम चुना जाए जो कि स्थिति के अनुकूल हो। इनके कहने का अभिप्राय यह था कि समायोजित मॉडल में उन्होंने ज्ञानात्मक पक्ष के पांचवें और छठे उप वर्ग को एक दूसरे से उल्टा कर दिया। पांचवा वर्ग मूल्यांकन और छठा वर्ग संश्लेषण का रखा और यह स्पष्ट किया कि यह उल्टा उप वर्ग तभी प्रयोग किया जाए जो कि परिस्थिति के अनुकूल हो और जो उच्च कार्यकुशलता के स्तर के लोग हैं या विद्यार्थी हैं, उन्हे इसमे उलझने की कोई भी आवश्यकता नहीं होगी। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि उचित रूप से मूल्यांकन करने के लिए हमें नीतियों को समझने का पर्याप्त अनुभव होना चाहिए। इसके अभाव में यह समायोजित मॉडल उचित सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए एक मूल्यांकन कर्ता या फिर प्राध्यापक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि वह मूल्यांकन की नीतियों को बहुत अच्छे प्रकार से समझता है तथा उचित प्रकार से वह अनुभवी है। तभी वह इस समायोजित मॉडल का प्रयोग करें।

निष्कर्ष रूप में ब्लूमिंग टैक्सनॉमी में छात्रों के ज्ञान एवं बुद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के साथ बौद्धिक विकास पर भी बल देती है। ज्ञानात्मक वर्गीकरण विद्यार्थियों के मूल्यांकन में अत्यधिक प्रभावशाली एवं उपयोगी भी सिद्ध हुआ है। अतः ब्लूम के माध्यम से हम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कर वर्तमान युग में शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

Singhal, JP. Academic continuous and comprehensive evaluation in Social Sciences, 2010.

The Indian Journal of Social Work , vol. 59, pg 625-626.

Journal of Indian Education ,vol. 18 pg 11

Collins, J.K. Evaluating the Quality Learning, 1982.

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन :अर्थ ,उद्देश्य, महत्व

ISBN: 978-81-955611-4-8